आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 06-01-15

हम भाग्यशाली आत्माओं को ज्ञान और योग का बेलेन्स सिखलाकर मास्टर टीचर बनाने वाले, बेहद के टीचर-बाप ने कहा, मीठे बच्चे - ज्ञान की धारणा के साथ-साथ सतयुगी राजाई के लिए याद और पवित्रता का बल भी जमा करो.

हम सब ब्राह्मण आत्माओं का लक्ष्य है सर्वगुण सम्पन्न 16 कला सम्पूर्ण बनना. यह लक्ष्य को पाने का सहज पुरुषार्थ है - सदा खुशी में रहना, बहुत-बहुत मीठा बनना, सबको प्रेम से चलाना, किसी को भी मन-वचन-कर्म से दुख नहीं पहुँचाना. मधुबन में रहने वाला, सेन्टर पर रहने वाला या ग्रहस्थ आश्रम में रहने वाला, अगर हर ब्राह्मण आत्मा यह चार बातों को अटेन्शन रखकर अपने में धारण करें तो बहुत जल्दी ही यह सारा संसार स्वर्ग बन जाये क्योंकि बाबा कहते है हम ही पूज्य आत्मा ये है, हमें ही सर्वगुण सम्पन्न 16 कला सम्पूर्ण बनना है. हम नहीं बनेंगे तो और कौन बनेगा!

आज की बाबा की मुरली से ज्ञान और योग पर पॉइन्टस निकालकर बाप की याद में पढ़ेंगे तो हमारी ज्ञान की धारणा पक्की होती जायेगी और आत्मा भी पावन बनती जायेंगी. आत्मा में ज्ञान और योग का बल भरता जायेगा.

ज्ञान पर कहे गये महावाक्य -

- बाप ने कहा, बच्चे जानते है बाप आया हुआ है और बाप ने सारे सृष्टि चक्र का ज्ञान बुद्धि में बिठाया. तुम बच्चों की भी बुद्धि में है कि हमने 84 जन्म पूरे किये, अब नाटक पुरा होता है. अब हमें पावन बनना है योग वा याद से.

- बाप कहते हैं मैं ज्ञान का सागर हूँ. तुम बच्चे मुझसे सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हो. मूलवतन, सूक्ष्मवतन....सब याद है. जो नॉलेज बाप में है, वह भी तुम्हें मिली है. तो नॉलेज को धारण भी करना है.

- बाप कहते है अभी तुम पवित्र भी बनते हो. बाप से राजाई भी लेते हो. बाप अपने से भी ज्यादा मर्तबा देते है. तुम 84 जन्म लेते-लेते मर्तबा गँवा देते हो. यह नॉलेज तुम बच्चों को अभी मिली है. ऊंच ते ऊंच बनने की नॉलेज ऊंच ते ऊंच बाप द्वारा मिलती है.

- बाप कहते हैं मैं कल्प-कल्प तुम बच्चों को यह बेहद की कहानी सुनाता हूँ. अब तुम्हारी बुद्धि में है कि हम अपने घर में जायेंगे फिर नई दुनिया में आयेंगे. अब कि पढ़ाई अनुसार अन्त में तुम ट्रांसफ़र हो जायेंगे. वापिस घर जाकर फिर नम्बरवार पार्ट बजाने आयेंगे. यह

राजधानी स्थापन हो रही है. अभी जो पुरुषार्थ करेंगे वही पुरुषार्थ तुम्हारा कल्प-कल्प का सिद्ध होगा.

- बाप कहते हैं तुमको 5 विकारों रुपी रावण ने कितना बेसमझ बनाया है. तुम जानते हो बरोबर हम ही पहले लक्ष्मी-नारायण जैसे दैवी-देवता थे. हाँ, पहले उत्तम से उत्तम भी हम ही थे फिर नीचे गिरते महान पतित बनें.

योग पर कहे गये महावाक्य -

- बाप कहते है यहाँ इस योग और ज्ञान से तुम्हें बल मिलता है बेहद का क्योंकि बाप सर्वशक्तिमान ऑथोरिटी है. बाप बच्चों को राजाई के लिए योग और पवित्रता भी सिखलाते है.

- बाप कहते है मैं तो आया हूँ बच्चों को सुखी बनाने तो तुमको भी सबको सुख देना है. बाप कभी किसको दुख नहीं दे सकता. उनका नाम ही है दुख हर्ता सुख कर्ता.

- बाप कहते है अभी तुम बच्चे जानते हो ऊंच ते ऊंच है शिवबाबा. बाप से हम बच्चे वर्सा लेते हैं. बाप की नॉलेज और वर्सा यह दोनों स्मृति में रहें तो सदैव हर्षित रहेंगे. बाप कि याद में रह फिर तुम किसको भी ज्ञान का तीर लगायेंगे तो अच्छा असर होगा. उसमें शक्ति आती जायेगी.

- बाप कहते है तुम पहले-पहले बाप की महिमा सुनाते हो कि ऊंच ते ऊंच भगवान एक है, हम उनको ही याद करते हैं. यह राजयोग बाप ही सिखलाते है. वह है ऊंच ते ऊंच निराकार बाप. वह बनाते भी है हमें ऊंच लक्ष्मी-नारायण जैसा दैवी-देवता.

- बाप कहते है तुम बच्चों को सदैव खुशी रहती है क्योंकि तुम जानते हो हमको सुप्रीम बाप ने अपना बच्चा बनाया है, वही हमको टीचर बनकर पढ़ाते हैं. फिर सच्चा सतगुरु भी वह है जो हमको साथ ले जाते है. सर्व का सद्गति दाता एक है. ऊंच ते ऊंच बाप ही है जो भारत को हर 5 हजार वर्ष बाद वर्सा देते हैं. उनकी ही तो हम शिव जयन्ती भी मनाते है.

- बाप कहते हैं लाडले बच्चे, सुखधाम, शान्तिधाम को याद करो. ऊंच ते ऊंच है शिवबाबा. वह भारत को स्वर्ग बनाते हैं.

ॐ शांति.

Feedbacks/Queries/Suggestions to Atma Bhai on email
a.brahmin.soul@gmail.com.